B.B. College, Jaynagar
Deptt of. Pol. science
B.A-III, Pub-Adminis-

Dr. A.K. Yadav
Asst prof. G.P.T.S
Political science

Lecture No - 08 And 09

Date - 06-11-2020

नौकरशाही सिद्धांत (मैक्स वेबर तथा उसके आलोचक)

वर्तमान समय में नौकरशाही तमाम शासन व्यवस्था के लिए अनिवार्य प्रशासनिक व्यवस्था होने के बाद भी इसका अर्थ प्रशासन की निरंकुशता, लालफीताशाही, तदर्थवादी प्रवृति, संकुचित दृष्टिकोण जैसी बुराइयों से लगाया जाता है। इसके रूप व कार्य पर उदारवादी और मार्क्सवादी विचारकों ने अलग-अलग ढंग से विचार किया है। परम्परागत उदारवादियों ने इसे अधिक से अधिक आवश्यक बुराई के रूप में सराहा है। तो समसामयिक उदारवादी इसे आवश्यक अच्छाई मानने लगे हैं। परन्तु मार्क्सवादियों ने तो इसकी खुली निंदा की है। इस व्यवस्था के बदले सोवियतों के अधीन नए प्रकार की सार्वजनिक सेवाओं का सुझाव दिया है। मार्क्स के मतानुसार नौकरशाह अपने हाथों में प्रशासन की शक्ति संभालकर बुर्जुआ राजनीतिक व्यवस्था को बनाए रखते हैं। राजनीतिक अर्थ में नौकरशाही शासन के संभ्रांत वर्ग शासन है। मोस्का और राबर्ट मिशेल्स के विचार में नौकरशाही एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से प्रभुत्वशाली वर्ग पूरे समाज पर अपना नियंत्रण रखता है। जो भी हो तमाम विचारधारा या लोग इस बात को स्वीकार करते हैं कि नौकरशाही के बगैर आज की प्रशासनिक व्यवस्था को चलाया नहीं जा सकता है तो यह आलोचना किस बात की। ये सुधार की बात क्यों नहीं करते हैं?

नौकरशाही का व्यवस्थित अध्ययन करने वाला प्रथम समाजशास्त्री मैक्स वेबर है। इसने नौकरशाही को शासन संचालन के लिए अनिवार्य एवं तर्कपूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था माना है और उसे मानवीय व्यवहार में तर्कपूर्णता लाने का सर्वोत्तम साधन बताया। वेबर ने यह देखा की आज नौकरशाही का गलत अर्थ लगाया जाता है, जबकि इसके बिना शासन संचालन असंभव है। वेबर इस बात को स्वीकार करता है कि नौकरशाही विभिन्न प्रकार की बुराइयों से ग्रसित हो गई है। इसका स्वरूप, सिद्धांततः अवैयक्तिक होने के बाद भी विभिन्न के विशेष हित, मूल्य वर्ग एवं शक्ति से सम्बद्ध हो गया है। इसका हित शासन के संचालन से कम अपनी सत्ता को बनाये रखने में ज्यादा है। फिर भी मैक्स वेबर नौकरशाही की अनिवार्यता को देखते हुए उसे इन बुराइयों से मुक्त करना चाहता है और एक ऐसी नौकरशाही की बात करता है जिसका लक्ष्य सुशासन है। उसके अनुसार नौकरशाही का यह स्वरूप आदर्श नौकरशाही होगा।

मैक्स वेबर आदर्श नौकरशाही को स्पष्ट करने के लिए औचित्यपूर्ण सत्ता का वर्गीकरण निम्नलिखित तीन भागों में करता है —

1 - परम्परागत सत्ता
2 - करिश्माई सत्ता (गौरवपूर्ण सत्ता)
3 - विधिक (कानूनी) सत्ता

Scanned with CamScanner

परम्परागत और करिश्माई सत्ता पर आधारित नौकरशाही को मैक्स वेबर अच्छा नहीं मानता। वह कहता है कि परम्परागत नौकरशाही रूढ़िवादिता, जातीयता एवं अन्य अवैज्ञानिक मान्यता पर आधारित होती है तथा करिश्माई सत्ता पर आधारित नौकरशाही इसलिए उचित नहीं है क्योंकि इसमें व्यक्ति विशेष के करिश्मा से नौकरशाही का स्वरूप जुड़कर विकृत हो जाता है। जबकि आदर्श प्रकार की नौकरशाही विधिक सत्ता के विशुद्धतम प्रयोग का वह रूप है, जिसमें नौकरशाही में योग्य प्रशासकीय कार्मिक होते हैं। ऐसे संगठन के प्रमुख सत्ताधारी की नियुक्ति योग्यता पर होती है, जो भी विधिक परिधि के अन्तर्गत आता है।

आदर्श नौकरशाही की विशेषताएँ —

मैक्स वेबर के द्वारा आदर्श नौकरशाही की निम्नलिखित विशेषताएँ बतायी है।

(1) आदर्श नौकरशाही में स्पष्ट श्रम विभाजन होता है।
(2) इसमें निश्चित कार्य विधियाँ होती है।
(3) इस प्रकार की नौकरशाही में निश्चित कार्य क्षेत्र होता है।
(4) इसमें कार्यों को पूरा करने के लिए निश्चित समय एवं विधिपूर्वक व्यवस्था होती है।
(5) आदर्श नौकरशाही पदसोपान पद्धति पर आधारित होती है जिसमें संस्तर पदाधिकारियों का स्पष्ट कार्य एवं उत्तर दायित्व होता है, साथ ही साथ संचार, समन्वय, अधीक्षण, नियंत्रण क्षेत्र आदि की भी उचित व्यवस्था होती है।
(6) आदर्श नौकरशाही में पद के लिए योग्यता एवं अर्हता का महत्व होता है।
(7) आदर्श प्रकार की नौकरशाही का स्वरूप अवैयक्तिक होता है।
(8) इसमें चयन का आधार योग्यता होती है।
(9) इसमें जुड़े पदाधिकारियों को निश्चित पारिश्रमिक मिलता है।
(10) इसमें सजा के साथ नियमों का कठोरता से पालन किया जाता है।

End

Scanned with CamScanner